IMPACT FACTOR : 3.0498
Peer Reviewed
ISSN-2348-2702

APOORV KNOWLEDGE

International Journal of Multidisciplinary Research

ONE DAY MULTIDISCIPLINARY NATIONAL CONFERENCE ON

INDIAN SOCIETY : PROBLEMS AND SOLUTIONS

• Organized by •

Shri. Dnyaneshwar Shikshan Sanstha's

SHIVCHHATRAPATI ARTS COLLEGE

Pachod, Tq. Paithan, Dist. Aurangabad (M.S.)

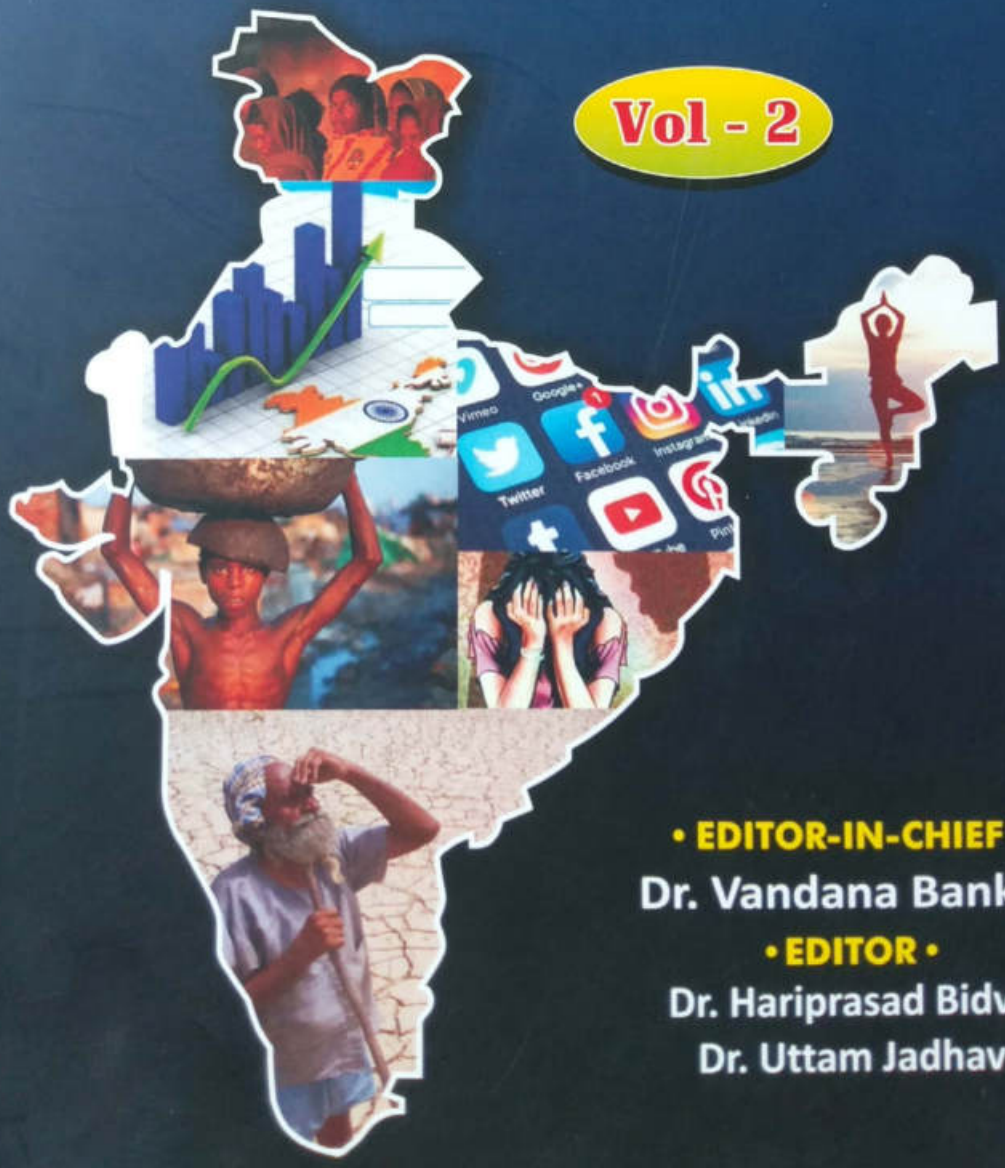

• EDITOR-IN-CHIEF •
Dr. Vandana Bankar
• EDITOR •
Dr. Hariprasad Bidve
Dr. Uttam Jadhav

Scanned with CamScanner

35.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में सामाजिक समस्याएँ और समाधान ('सूरज का सातवाँ घोडा' और 'नौकर की कमीज' के विशेष संदर्भ में) डॉ. रविंद्र कारभारी साठे	123
36.	स्त्री विमर्श प्रा.डॉ. जाधव अर्जुन रतन	127
37.	दलित आत्मकथाओं में व्यक्त आंबेडकर विचार 'जीवन हमारा' के विशेष संदर्भ में डॉ.विटोरे कुलुलाल आसाराम	130
38.	भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरण कितना सच कितना झुठ... प्रा.डॉ. दीपक विनायकराव पवार	134
39.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ प्रा. तुकाराम पाराजी गावंडे	137
40.	महिला कहानीकारों की कहानियों में स्त्री–विमर्श डॉ.विठ्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत	142
41.	मॉल मून में अभिव्यक्त उत्तरआधुनिकवाद डॉ.परमेश्वर जिजाराव काकडे	144
42.	नासिरा शर्मा और आशा बगे की कहानियों में स्त्री विमर्श सिद्धार्थ शेषराव भटकर	147
43.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना प्रा.श्रीमती पोटकुले हिरा	151
44.	स्त्री विमर्श साहित्य समाज और मिडिया डॉ संतोष नामदेव तांदळे	154
45.	दलित उपन्यास साहित्य डॉ. दत्तात्रय लक्ष्मण येडले	157
46.	सोशल मीडिया एक वास्तविकता डॉ. दत्तात्रय नानासाहेब फुके	159
47.	आदिवासी उपन्यास में शैक्षिक आयाम भाग्यश्री विलास कोष्टी	161
48.	फैसला काहनी मे नारी विमर्श (मैत्रेयी पुष्पा) प्रा. डॉ. कडेकर सी. जी.	164
49.	ग्रंथालय सुरक्षा आणि उपाययोजन डॉ.योगेश प्रभाकर भाले	166
50.	महाविद्यालयीन ग्रंथालयात माहिती तंत्रज्ञान व्यवस्थापनात ग्रंथपालाची भुमिका डॉ. ह.सो. बिडवे	169
51.	म. जोतिबा फुले यांच्या साहित्याने केलेलासामाजिक (सकारात्मक)बदल प्रा. विनोद जगन्नाथ कांबळे	173

Scanned with CamScanner

ISSN No. - 2348-2702, Impact Factor : 3.0498, Vol. II, 2nd March 2019

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में सामाजिक चेतना

प्रा.श्रीमती पोटकुले हिरा

कला व विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर गढी. गेवराई,बीड, महाराष्ट्र

साहित्यकार समाज की इकाई होने के नाते समाज की प्रत्येक गतिविधि से प्रभावित होता है। व्यक्ति या साहित्यकार जो स्वयं अनुभव करता है समाज में देखता है उसी का प्रत्यक्ष एवं सजीव चित्रण साहित्य के माध्यम से प्रकट करता है। स्वातंरयोत्तर काल में भी साहित्यकारों ने तत्कालीन परिस्थितियों का जीवंत चित्रण किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ऐसी अनेक समस्याएँ सामने आई जिनके प्रति हिंदी साहित्यकारों ने सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण करके जागरुकता का परिचय दिया है। भारत–पाक विभाजन के कारण जो धार्मिक, साम्प्रदायिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक उथल–पुथल के कारण जो समस्याएँ सामने आई उनका यथार्थपरक चित्रण हिंदी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में किया है। साहित्यकारों ने स्वतंत्रता प्राप्ति और उससे उत्पन्न मोहभंग,जटिल आर्थिक परिस्थितियों से उत्पन्न कुंठा अकेलापन, संत्रास, निराशा आदि से पीडित व्यक्ति की पीडा,करुणा को अभिव्यंजित किया है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य जीवन के अधिक नजदीक है,उसमें यथार्थ का पुट अधिक है। मानवीय संबंधों के बदलते रूप को उजागर करने का प्रयास किया है साथ ही मन के भीतर की परतों को उघेडने का प्रयास हिंदी साहित्य ने किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आधुनिकता बोध से उत्पन्न अकेलेपन,यौन विसंगतियां,विद्रोह कुण्ठा एवं मूल्यों का –हास साहित्य सृजन के विषय है।

देश में स्वतंत्रता के पश्चात एक नई चेतना का विकास हूआ और स्वतंत्रता प्राप्ति की जनमानस ने जो अपेक्षाएँ की थी वे पूरी नहीं हो सकी। सर्वत्र स्वार्थपरता, छलकपट, भ्रष्टाचार, अवसरवादिता का बोलबाला होने के कारण युवा पीढी दिग्भ्रामित हो गई। बढती बेरोजगारी ने तनाव, संघर्ष एवं आपराधिक प्रवृतियों ने जन्म लिया। महानगरिय जीवन,औद्योगीकरण के कारण जीवन और जगत में अनेक नई समस्याओं का जन्म हुआ। इस युग में जो उपन्यास लिखे गए उनमें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से संबंधित गहण चिंतन प्रस्तुत किया गया है। इस काल में जन–जीवन की विरूपताएँ, अदृष्ट विंडबनाएँ मानवीय कुंठाएँ मनोवैज्ञानिक विकृतियाँ, भ्रष्टाचार, विवशता का सशक्त चित्रण किया है। इस युग में आते–आते नारी को समानाधिकार प्राप्त है किंतु आज वह नई समस्या से ग्रस्त है क्योंकि नारी स्वातंरय के नाम पर वह उच्छृंखल होती जा रही है। इस काल में आधुनिकता के कारण घर से बाहर निकलने के कारण नारी घर और नौकरी दोहरे भार को वहन करने के लिए मजबूर है। प्रभा सक्सेना ने 'टुकडों में बंटा इंद्रधनुष' में दहेज विरोधी एक साहसी नारी का चित्रण किया है। एक युग था जब निश्चित वय तक विवाह न होने पर नारी पर समाज की उंगलियाँ उठा करती थी, किंतु अब ऐसा नहीं है। उषा प्रियंवदा के 'पचपन खम्मे लाल दीवारें' में नायिका सुषमा अपने भाई–बहनों के लिए कुछ करना चाहिए इस विचार से अविवाहित रहकर परिवार का आधार बनती है।

फणिश्वरनाथ रेणू ने अपने उपन्यास में 'मैला आंचल'१९५४ तथा 'परती परिकथा' १९५७ में बिहार के ग्रामीण आंचल के रहन–सहन, रीति–रिवाज,राजनीतिक आस्थाओं का चित्रण किया है। श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' में स्वातंत्र्योत्तर भारत के ग्रामीण जीवन की मूल्यहिनता को परत–दर–परत उघाडने की कोशिश की है। इसमें बडे नगर से कुछ दूर बसा हुआ गांव शिवपाल गंज है,जहां की जिंदगी प्रगति और विकास के तमाम नारों के बावजूद निहित स्वार्थों एवं अवांछनीय तत्वों के सामने घिसट रहीं है। शिवपाल गंज की पंचायत,कालेज की प्रबन्ध समिति और कोऑपरेटिव सोसाइटी के सूत्रधार वैध जी राजनीतिक संस्कृति के प्रतिनिधी है। 'हुमरी', 'रसप्रिया', 'तीसरी कसम' कहानियों में ग्रामांचल

Scanned with CamScanner

के जीवन की करूण कथा का चित्रण है। भीष्म साहनी कृत 'तमस' में विभाजन की मानसिकता और उससे लाभ उठाने वाले लोगों का बेनकाब किया है साथ ही विभाजन से उत्पन्न समस्याएँ और परिस्थितियों को भी अभिव्यक्त किया है।

रामदरश मिश्र ने 'जल टूटता हुआ' में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय जीवन में व्यापक –हास और गिरावट के दौर को दिखाने का प्रयास किया है। सरकार के सारे विकासी प्रयत्नों के बावजूद गॉव टूट रहे है, विकास के बाँध दरक रहे हैं। इस उपन्यास का नायक सतीश आज की व्यवस्था पर कटाक्ष करता हूआ कहता है–''शातिर और चोर,बदमाश तो बहुत से लोग है दीवान साहब लेकिन उपर से बडे रंगीन–रंगीन चोंगे ओढे हुए है। पुलिस भी धोखा खा रही है और उन्हें पकडने की हिम्मत उसे नहीं होती।''[१] मोहन राकेश ने 'न आने वाला कल' में आधुनिक जीवन की विसंगतियॉ, समस्याएँ व्यक्ति को किस प्रकार से संत्रस्त करती हैं साथ ही अस्तित्व की समस्या मनुष्य को किन–किन उलझनों में डाल देती है,इसका सशक्त चित्रण किया है। मन्नु भंडारी कृत 'आपका बंटी' में तलाकशुदा दम्पत्ति के बच्चों पर पडने वाले दुष्प्रभाव का निरूपण किया है। आधुनिक जीवन के टूटते व्यक्ति का चित्रण किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने उपन्यासों में दहेज,अनमेल विवाह, बाल विवाह आदि सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया है। समाज में व्याप्त स्वार्थी राजनेता, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अपराध जैसी समस्याएँ व्यक्ति के जीवन को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप से प्रभावित करती है इसका चित्रण लेखिका ने अपने साहित्य में किया है। 'बेतवा बहती रही', 'चाक', 'कस्तुरी कुण्डल बसै, इन उपन्यासों में स्त्री जीवन की त्रासदी का कारण 'दहेज' समस्या का चित्रण किया है। 'कस्तुरी कुण्डल बसै'की नायिका कस्तुरी इस कुप्रथा का विरोध करती है और समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करती है। लेखिका ने अपने साहित्य में प्रेमिका, वेश्या, सधवा विधवा, मजदूर, किसान, अफसर, मास्टर, डॉक्टर, राजनेता इन सभी लोगों का चित्रण किया है। स्वातंरयोत्तर काल में भी जातिव्यवस्था के दुष्परिणाम व्यक्ति को भुगतने पडे है। लेखिका ने 'चाक' में बिसून देवा और गुलकंदी के द्वारा अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को उदघाटीत किया है साथ ही आज भी जाति– व्यवस्था के आधार पर कार्यक्षेत्र निर्धारित किये है इसका चित्रण किया है। रंजीत पढा–लिखा होने के बाद मुर्गी पालन का व्यवसाय करना चाहता है परंतु समाज में जीवित जाति–वर्ण व्यवस्था और धार्मिक संस्कारों के कारण इस व्यवसाय को निम्न समझा जाता है। पढे–लिखे व्यक्ति को भी गॉववाले यह व्यवसाय करने की अनुमती नहीं देते। ''ऐसा अनरथ मत करे भैया। माना की तु पढकर आया है पर यह अब तक हमारे गॉव में भंगी करते रहे हैं। किसी सक्का तक ने मुर्गी नहीं पाली। बनिया ,ब्रहमण और जाट ठाकुरों के ये काम नहीं।''[२] इन गॉव वाले के विचार आज भी हमारे समाज में जीवित है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में सामाजिक, आर्थिक,राजनितिक,धार्मिक,सांस्कृतिक परिस्थिति और समस्याओं का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अंकन कुशलता पूर्वक किया है।

सेठ गोविंददास ने 'गरीबी या अमीरी' में नारी की स्वालंबन की भावना को व्यक्त किया है। यद्यपि आज की नारी अपने अस्तित्व को पहचान गयी है परन्तु अब भी देहात के क्षेत्रों में नारी को अनेक प्रकार के कष्ट दिए जा रहे है इसे चित्रित किया है। सेठ गोविंददास ने अपने साहित्य में समकालीन समस्याओं, छूआछूत, भ्रष्टाचार, पाखण्ड, नेताओं की स्वार्थपरता आदि का निरूपण किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात समाज में हरिजन बहुत पिछडे हुए और उनकी दशा अत्यन्त सोचनीय थी,उनको समाज में आदर सम्मान नहीं था। अब उनको प्रत्येक क्षेत्र में सुविधाएँ प्रदान की गई है। वृंदावनलाल वर्मा ने 'निस्तार' और जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद ने 'समर्पण' में हरिजनों में विशेष जागृति की भावना का चित्रण किया है। अपने जीवन में स्वस्थ विकास न होने पर व्यक्ति निराश एवं चिंता ग्रस्त हो जाता है। इसी कारण उसको न उचित शिक्षा प्राप्त होती है, न नौकरी मिल पाती है और न ही विवाह हो पाता है। समग्र रूप में व्यक्ति टूटता जा रहा है। इसी समस्या का चित्रण जगन्नाथ प्रसाद मिलिन्द ने 'समर्पण' में किया है। आज के युग में युवा पिढी माता–पिता,गुरू आदि का कहना नही मानते, वह अपने जीवन में अनैतिक तत्वों को प्रोत्साहन

Scanned with CamScanner

ISSN No. - 2348-2702, Impact Factor : 3.0498, Vol. II, 2nd March 2019

देते है। इसी विचार को आधार बनाकर वृंदावनलाल वर्मा ने 'बॉस की फॉस' नाटक में विद्यार्थियों में अनुशासन की कमी को प्रस्तुत किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति की जनमानस ने जो अपेक्षाएँ की थी वो पूरी न होने के कारण और विभाजन से उत्पन्न नई समस्याओं के कारण व्यक्ति कुंठाग्रस्त बन गया। इसी कुंठाग्रस्त, तणाव, पीडा का चित्रण उपेंद्रनाथ अश्क ने 'भंवर' नाटक में प्रतिभा चरित्र के माध्यम से किया है। प्रतिभा कहती है–''ओह–ओह!कितना शून्य है यह जीवन। कहीं भी तो कोई ऐसी चीज नहीं जो ठोस हो जिसका सहारा लिया जा सके।''[३]

अत: स्पष्ट है स्वातंत्र्योत्तर काल में भारत–पाक विभाजन से उत्पन्न विपरित परिस्थिति, अनेक नई समस्याएँ, मोहभंग, संत्रास का यर्थाथ चित्रण साथ ही समाज सुधार की प्रवृति को आधार बनाकर साहित्यकारों ने बाल–विवाह, अनमेल– विवाह, छूआछूत, वर्णव्यवस्था, नारी–स्वातंत्र्य, धार्मिक अंध–विश्वास, जैसी अनेक समस्याओं का चित्रण तत्कालीन रचनाओं में हुआ है। स्वतंत्रता के बाद हमारी मानसिकता में बदलाव आकर प्रजातांत्रिक मूल्यों के संबन्ध में हमारी आदर्शवादी कल्पनाएँ थी वह झूठी साबित होकर जीवन के कठोर यर्थाथ से हमारा परिचय और भी गहरा हो गया। भूख, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, पीडा, संत्रास जैसी समस्याओं ने हमारे जन–जीवन को पूरी तरह से प्रभावित किया है।

संदर्भ

1.जल टूटता हुआ–रामदरश मिश्र,पृ.236
2.भंवर– उपेन्द्रनाथ अश्क,पृ.53
3.चाक– मैत्रेयी पुष्पा,पृ.53

Scanned with CamScanner